अमिताश ओझा

अर्थ का अर्थ

चित्रः अतनु राय

जब से दुनिया बनी है शायद तभी से सवाल किए जा रहे हैं। उनके जवाब भी दिए गए हैं। कितनी ही बार जवाब पूरी तरह से सन्तुष्ट नहीं करते या फिर अधूरे-से लगते हैं। ऐसा लगता है तो यह बिल्कुल सही है ...क्योंकि एक दार्शनिक का काम ही सवाल पर सवाल पूछना है।

जैसे एक सवाल है कि शब्दों में अर्थ कहाँ छुपे रहते हैं...

शब्दों में कहाँ छुपे रहते हैं अर्थ

तुम्हारे मन में यह सवाल ज़रूर आया होगा कि आखिर शब्दों के अर्थ कैसे आते हैं? एक ही शब्द के कई अर्थ कैसे हो सकते हैं? और सबसे बड़ी बात यह कि क्या होता है जब हम किसी शब्द का अर्थ समझ जाते हैं और क्या होता है जब हम किसी शब्द का अर्थ नहीं समझ पाते हैं? ...मतलब यह कि आखिर अर्थ हैं क्या?

चलो एक उदहारण से इन सवालों को समझते हैं। मान लो तुमने अपने दोस्त से सवाल किया कि उसका नाम क्या है? और उसने अपना नाम बता दिया। बात कितनी सीधी है - तुमने नाम पूछा और उसने बता दिया। इसमें सोचने वाली क्या बात है? लेकिन अगर तुमने यही वाक्य किसी दूसरी भाषा में पूछा होता तो वह जवाब नहीं दे पाता। तुम कहोगे बिल्कुल सही। शायद उसे वो भाषा नहीं आती होगी। सही है पर सवाल भी तो यही है.... कि भाषा आने का क्या मतलब होता है? आखिर उसके दिमाग में क्या हुआ होगा कि पहली बार तो उसने तुम्हारे शब्दों का अर्थ समझा .... पर दूसरी भाषा में पूछे गए सवाल को समझा ही नहीं ...।

एक ही चीज़ को अलग-अलग भाषा में अलग-अलग तरह से कहा जाता है। जैसे - हिन्दी में पानी, अँग्रेज़ी में वॉटर, तेलुगु में नीलू, मलयालम में वेल्लम वगैरह-वगैरह। आखिर एक ही वस्तु के लिए कई सारे शब्द कैसे हो सकते हैं?

एक और सवाल ... जब हम गाय लिखते हैं और किसी को दिखाते हैं तो वह फौरन समझ जाता है। लेकिन सोचिए गाय शब्द तो गाय जैसा बिल्कुल नहीं दिखता। फिर भी हम कैसे समझ जाते हैं कि हम किस वस्तु के बारे में बात कर रहे हैं। यह सवाल लिखित भाषा से सम्बन्धित है।

बड़ा सवाल यह है कि क्या "गाय" शब्द में ही गाय का अर्थ छुपा हुआ है या कहीं और। कई लोगों का मानना है कि "गाय" शब्द में ही गाय का अर्थ छुपा हुआ है। उनका कहना है कि यदि हम "गाय" शब्द देखते हैं तो हमारे मस्तिष्क में गाय का एक चित्र बन जाता है। इससे हम समझ जाते हैं कि यह गाय है। मस्तिष्क में गाय का चित्र सिर्फ "गाय" शब्द को देख कर ही बनता है। यदि हम "बिल्ली" शब्द देखें तो मस्तिष्क में बिल्ली का चित्र बनेगा न कि गाय का। न जाने कितने दार्शनिक इस बात को मानते हैं। उनका तो यहाँ तक कहना है कि दुनिया की सारी वस्तुओं के नाम पहले से ही तय किए जा चुके हैं और उन्हें भगवान ने नाम दिए हैं। यानी सारे शब्द भगवान ने पहले से ही बना दिए हैं।

इस के विपरीत कई दार्शनिक मानते हैं कि शब्दों के अर्थ होते ही नहीं हैं। बल्कि हम उन्हें कैसे प्रयोग करते हैं इसपर उनके अर्थ निर्भर करते हैं। उनका मानना है कि यदि शब्दों के अर्थ शब्दों में ही छिपे होते तो हम सिर्फ शब्दों को देखते और उनका अर्थ समझ जाते। भाषा को जानने या न जानने का सवाल ही नहीं उठता। लेकिन ऐसा होता नहीं है। उनका यह भी मानना है कि शब्दों के अर्थ हमारे मस्तिष्क की उपज हैं यानी दुनिया में किसी वस्तु का कोई नाम है ही नहीं .... हम उन्हें अपनी सुविधानुसार नाम देते हैं।

चलिए एक और उदहारण देखते हैं

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय
ये खाए बौराए नर ये पाए बौराए

इस दोहे का अर्थ यह है कि कनक (धतूरा) कनक (सोना) से कई गुना ज़्यादा नशा देने वाला है। एक को खाने से नशा आता है और दूसरे को पाने से। यहाँ कनक के दो अर्थ हैं – एक का मतलब है "धतूरा" और दूसरे का अर्थ है "सोना" (धातु)। ज़रा सोचो कि हमें कैसे पता चला कि कनक के यहाँ दो अर्थ हैं। तुम कहोगे कि दोहा पढ़कर उनका अर्थ पता चलता है। इसका मतलब यह हुआ कि कनक शब्द का अपना कोई अर्थ नहीं है। दूसरे शब्दों पर ही इसका अर्थ निर्भर करता है। यहाँ तो सवाल एक ही भाषा का है। यदि एक ही भाषा में एक ही शब्द के कई अर्थ हों तो हमें कैसे पता चलता है कि किस अर्थ के बारे में बात की जा रही है। यदि हम भाषा के अन्दर जाएँ तो पता चलेगा कि इसमें न जाने और कितने रहस्य छुपे हुए हैं। उदाहरण के लिए अफ्रीका की एक आदिवासी भाषा में रंगों के लिए शब्द ही नहीं हैं पर आश्चर्य ये कि वे रंगों के बारे में बात कर लेते हैं। इसी तरह कुछ ठण्डे प्रदेशों में बर्फ के लिए पचास से ज़्यादा शब्द हैं। दक्षिण अमरीका के एक आदिवासी समुदाय की भाषा में समय बिताने के लिए कोई शब्द नहीं है। मतलब यह कि उनकी भाषा में कल, परसों जैसे शब्द हैं ही नहीं।

ऐसी ही न जाने कितनी और बातें हैं जो भाषा के बारे में की जा सकती हैं। यह तो एक झलक भर है।

ठण्ड से काँपता हुआ, दस साल का एक छोटा-सा लड़का। नंगे पैर वो जूतों की दुकान के बाहर खड़ा टकटकी बाँधे अन्दर झाँक रहा था।

एक औरत उसके पास आई और बोली, "तुम इतने ध्यान से क्या देख रहे हो?"

"मैं भगवान से अपने लिए एक जोड़ी जूते माँग रहा हूँ।", लड़का बोला।

वो औरत उसे हाथ पकड़कर दुकान के अन्दर ले गई। दुकानदार से उसने आधे दर्जन मोज़े लाने को कहा। फिर उसने दुकानदार से पूछा कि क्या उसे थोड़ा-सा गरम पानी और तौलिया मिल सकता है? दुकानदार ने तुरन्त ही पानी व तौलिया लाकर दे दिया।

वो औरत लड़के को दुकान के पीछे ले गई। वहाँ उसने अच्छी तरह से उसके पैर धोए, साफ किए और तौलिए से उन्हें पोंछा।

तब तक दुकानदार मोज़े लेकर आ गया था। औरत ने लड़के को मोज़े पहनाए और एक जोड़ी जूते भी खरीदकर दिए।

बाकी के मोज़े उसे दे दिए। फिर उसके सिर पर हाथ फेरते हुई बोली, "अब तुम्हें पहले से बेहतर लग रहा होगा ना!"

जैस ही वह जाने के लिए मुड़ी, लड़के ने उसका हाथ पकड़ लिया। आँसू भरी आँखों से उसकी ओर देखा और बोला, "क्या तुम भगवान की पत्नी हो?"

तुम कौन हो

प्रस्तुतिः अरविन्द गुप्ता

चित्रः अतनु राय